|  |
| --- |
| 18. Mai 2025 |
| **5. Sonntag der Osterzeit C** |
| Erste Lesung: Apg 14,21b-27; Zweite Lesung: Off 21,1-5a; Evangelium: Joh 13,31-33a.34-35 |
|  |  |  |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 329, 1+2+5 | Das ist der Tag |
|  | GL 551, 1+2 | Nun singt ein neues Lied |
|  | GL 754 | Halleluja, lasst uns singen |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 151 | Herr, erbarme dich unser |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 701 | Lasst uns Gott, dem Herrn |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 145,1-2.8-11.13c-14 |  |
|  | Kehrvers: GL 76, 1 | Der Herr ist nahe |
|  | Kehrvers: GL 394 | Laudate omnes gentes |
|  |  |  |
|  | Wenn nur die 2. Lesung genommen wird: |
|  | GL 479, 1-3 | Eine große Stadt ersteht |
|  | GL 553, 1+2+4 | Jerusalem, du hochgebaute Stadt |
|  |  |  |
|  | GL 483, 1+4 | Halleluja – Ihr seid das Volk |
|  |  |  |
| Halleluja: | GL 175, 2 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *So spricht der Herr:* |
|  | *Ein neues Gebot gebe ich euch:* |
|  | *Wie ich euch geliebt habe, so sollt auch ihr einander lieben.* |
|  |  |  |
| Credo: | sprechen |  |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL 281, 2+3 | Also sprach beim Abendmahle |
|  | GL 710, 1-3 | Unser Leben sei ein Fest |
|  | GL 474 | Wenn wir das Leben teilen |
|  | GL 477, 1+3 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 195 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 498, 2+3 | Hier ist das wahre Osterlamm |
|  |  |  |
| Danksagung: | GL 489, 1-3! | Lasst uns loben |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 336, 1-3 | Jesus lebt |
|  | oder ein Marienlied |